गीत की दो लाईन सुनते ही बच्चों की बुधी में रचता और रचना की आद मध्य अन्त का ज्ञान आ जाना
चाहिये। जिनकी अच्छी सालम बुधी है। सालक कहा ही जाता है सतोप्रधान बुधी को। सतो प्रधान भी
है तो सतो रजो तमो भी है। स्टेजिस होती है नाँ। बच्चे जानते है हमारी जो पत्थर बुधी हो गई है उनको
पारस बुधी बनाने वाला शिव बाबा आया हुआ है। रावण पारस बुधी से पत्थर बुधी बनाता है है। उनका तो
राज्य है। उनकी मतपर चलते-2 पत्थर बुधी बन जाते है। अब फिर शिव बाबा पत्थर बुधी से पारस बुधी
बनाने आये है। सो बनेंगे तब जब कि शिव बाबाप की श्रीमत पर चलेंगे। जितना जो चलेगा उतना ही
वो बनेंगें। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप आकर दैवी राजधानी स्थापन
करवाते है। करते है। हम ब्राहम्णों को देवी देवता बनाते है। देवी देवताओं की राजधानी है नाँ। यह
भी दुनियां में कोईको पता नही है। तुम बच्चों में भी नम्बरवार जानते है कि हमउँच ते उँच बनते है।
थोड़ा भी सुना तो सतयुग में तो आवेंगे ही। नशा तो उनको चढ़ता है जो समझते है कि हम अपनी राज-
धानी स्थापन अथवा हम स्वर्ग में ल-न बनने के लिये पढ़ रहे है। कई तोबिलकुल जानते ही नही है कि
हम पढ़ते है नर से नारायण बनने के लिये। बुधी में हो तो कुछ नो कुछ पढ़े भी। ऐस भी है जो कि पढ़ते
ही नही कि जो समझे कि हमको पढ़ाने वाला पारसनाथ है। उनसे हम पारस बुधी वां महाराजा
महारानी बनते है। प्रदर्शनी में तो कितना माथ मारते हो समझाने के लिये। तुम बच्चे जानते हो कि
दुनियां ही पत्थर बुधी है। रैप्स बुधी है। हर एक की चलन से ही समझा जाता है। जो खुद ही रैप
बुधी है वो कोई को क्या समझावेंगे। दैवी चलन तो बिलकुल न्यारी होती है। दुनियां के मनुष्य तो कुछ जानते
ही नही है। वो नशा रह नही सकता। अब प्रदर्शनी में जो आते है समझने के लिये उनकोयह समझाना
**************** ****** ***************
चाहिये की बाप को भूलने कारण ही निधनके बने है। रचता बाप को हा नही जानते है। वो भी
दो है। एक तो शिव बाबा दुसरा प्रजापिता ब्रहमा। तुम कहते हो हम ब्र,कु,कु, है। सिवाय प्रजापिता
ब्रहमा के इतने कुमार कुमारियाँ कहा से आवे। पत्थर बुधी तो यह भी समझते नही है। यह भी समझ नही
है कि शिव बाबा दवारा प्रजापिता ब्रहमा दवारा हम ब्राहम्ण, ब्राहमिणी बने है। बने है शिव बाबा दवारा।
शिव बाबा के बच्चे तो सब भाई-2। जबकि एक बाप के बच्चे तो फिर लड़ाई झगड़ा नही।
नाँ जानने कारण भाई-2 आपस में बहुत लड़ते है। किसी से नाँ बनी तो लड़ाई झगड़ा कर अलग हो जाते
है। अब तुम हो परमपिता परमात्मा शिव के बच्चे। तो बुधी में यही रहना चाहिये हम आत्माये शिव बाबा
की संतान है। शिव बाबा है स्वर्ग का रचता। तो तुमको भी स्वर्ग का मालिक होना चाहिये।
हम सिवाय ब्रहमा के स्वर्ग के मालिक बन नही सकते। यह अच्छी रीती बुधी में चलना चाहिये। बहुत अच्छे-2
बच्चों की बहुत थोडी बुधी चलती है। देह अभिमान बहुत है। समझते है हम सब कुछ पढ़ चुके है। बाप
कहते है अबतक तुम कुछ सीखे नही हो। देह अभिमान बहुत है। थोड़ा भी किसीको समझाया तो देह-
अभिमान बहुत आ जाता है। अभी तुम बच्चों को तो बहुत पढ़ना है। पहली-2 बात समझाओं सब एक
********** ***********
बाप की सन्तान भाई-2 है। शिव बाबा है स्वर्ग का रचता। हैवनली गाडफादर कहा जाता है नाँ। हैवन
स्थापन करने वाला वो निराकार बाप है। अब वो स्वर्ग कैसे स्थापन करे। हेवन में तो होते है देवी देवताये
अब मनुष्य को देवता कैसे बनाते है यह कोई समझते नही है। देवताओंके आगे माथा टेकते है। समझते
है कि यह होकर गये है। हम नही है। हम मनुष्य है। परन्तु बाप ने मनुष्य को देवता बनाया कैसे यह
कोई मनुष्य जानते नही है। मानुष से देवता किये.... यह महिमा ग्रन्थ की है। ग्रंथ वाले कृष्ण को नही
मानते है। परमात्मा को मानते है तो पारस नाथ बनाने वाले पारस नाथ की मत पर चलना पड़े नाँ। उनकी
ही मत नही मानेंगे तो पारसनाथ ही कैसे बन सकेंगे? बहुत है जो शिव बाबा की मत पर चलते नही है।
समझते नही है कि हमको शिव बाबा मत दे रहे है। समझते है कि ब्रहमा देते है। बाप खुद कहते है कि

5-5-67

है कि यह ज्ञान मैं तुमको देता हूँ। मैंने यह रथ लिया है। इनकी आत्मा भी पतित है। ब्रह्मा कौन है यह भी कोई नहीं जानते हैं। अब सूक्ष्म वतन में प्रजापिता ब्रह्मा कहाँ से आया। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहाँ होना चाहिये। प्रजापिता ब्रह्मा दवारा भगवान ही देवता बनाते है। जरूर मनुष्य में प्रवेश करे तब तो तुम ब्राह्मण बनो। ईश्वर की सन्तान तुम यहाँ पर ही बनते हो। सतयुग में तो यह ज्ञान भी नहीं होगा कि हम ईश्वर की सन्तान बने है। अभी तुम्हारे में ज्ञान है। हम शिव बाबा के बच्चे हैं। फिर ब्रह्मा दवारा भाई-बहन बने है। शिव बाबा तो निराकार है। ब्रह्मा दवारा स्वर्ग की स्थापना करवाते है। शंकर दवारा विनाश। अब ब्रह्मा और विष्णु का ज्ञान है भी तुम बच्चों को ही मिला है। ब्रह्मा सो विष्णु। अब सूक्ष्म वतन में ब्रह्मा सो विष्णु कैसे समझेंगे। यहाँ यहाँ पर ही समझाया जाता है कि प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ है सो ही फिर विष्णु वहाँ बनेंगे। बाकि तुम प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद देवतायें बन रहे हो। विष्णु पुरी अथवा ल-न के राज्य के मालिक बनते हैं। बाबा ने बच्चों को कल भी समझाया कि ध्यान दीदार में माया बहुत प्रवेश होती है। ऐसे नहीं कि यह दीदार करते है इसलिये उनकी पूँछ पकड़नी है। नहीं यह तो पढ़ाई है। तुम्हारे सन्यासी आदि भी कहते हैं कि हम गुरु की पूँछ पकड़ेंगे। उन्होंने फिर जानवर दिखा दिया है। इसलिये ही गऊ आदि दान करते है इनकी पूँछ आदि पकड़ कर तर जावेंगे। परन्तु ऐसे यहाँ तो कोई बात है नहीं। बाप कहते हैं, तुम भक्ति मार्ग में दान-पुण्य आदि करते थे कि दूसरे जन्म में मिलेगा। वो मृत्यु लोक का फिर भी मृत्यु लोक में ही मिलता है। तुम अभी संगम पर जो दान करते हो वो तुमको सतयुग में मिलेगा। मनुष्य इन बातों को क्या जाने? पत्थर बुधियों का राज्य और पारस बुधियों का राज्य कितना फर्क है। देवतायें पारस बुधी थे। विष्णु को पारस नाथ भी कहते है। उनका बहुत अच्छा मन्दिर बनाया हुआ है। यह किसीको पता नहीं है कि पारस नाथ कौन है। 4 दरवाजे दे दिये हैं। ब्रह्मा विष्णु शंकर और कृष्ण दे दिया है। एक-2 दरवाजे से दर्शन कर कुछ ना कुछ रखना होता है। बड़े-2 आदमी दान-पुण्य भी बड़ा-2 ही करते हैं। एक दरवाजा रुपैवाला गिन्नी रखी। फिर दूसरे पर गिन्नी। चारों पर एक जैसा ही रखना पड़े। मनुष्य लाख दो लाख भी दान पुण्य करते है। पारसनाथ का मेला बहुत लगता है सर्दी में। तुम बच्चे अभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो कि पारसनाथ किसको कहा जाता है। कौन बनाते हैं। पारस नाथ है ही विष्णु का चित्र। अलग मन्दिर भी होता है जिसको नर नारायण कहते है। नाम तो बहुत रख दिये है ना। सबकी अपनी-2 बुधी है। तो अब बाप समझाते है कि तुम सब भाई-2 हो। तो बाप से वर्सा लेने के हकदार हो। बाप है ही स्वर्ग की स्थापना करने वाला। जरूर हमको स्वर्ग में ही वर्सा चाहिये। बाबा को भी जरूर यहाँ ही आना पड़े ना वर्सा देने के लिये। बाप आते ही है ब्रह्मा के तन में। कहते भी है मैं बहुत जन्मों के अन्त में प्रवेश करता हूँ। इसका भी हिसाब है। पहले नम्बर में है कृष्ण वो है कुमार। इसलिये ही उनकी महिमा जास्ती है। वो ल-न फिर भी अधर कुमार हो गये। महिमा बच्चों की जास्ती होती है। तो बहुत जन्मों के अन्त में भी पहले उनको ही रखेंगे। यह भी पत्थर बुधी कुछ जानते नहीं है। 84 लाख जन्म कह देते है फिर हिसाब किताब कहाँ से निकले। बाप ही आकर बताते है जो फर्स्ट वो ही लास्ट। तुम ही फर्स्ट में थे वो ही फिर लास्ट में शूद्र बने हो। अभी फिर तुमको ब्राह्मण बनाते है। बाप तुमको वर्सा देते है। पतित से पावन बनाते है। प्रजापिता ब्रह्मा तो मनुष्य हो बनना ना। शिव को मनुष्य नहीं कहेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा कहाँ से आया। कहते है बहुत जन्मों के अन्त में इनके शरीर को अपना रथ बनाया। एडाप्ट करते है ना। स्त्री को भी एडाप्ट करते है फिर पियर घर का नाम बदल कर ससुर के घर का नाम रख देते है। बाप ने भी इनमें प्रवेश किया तो इनका नाम बदल दिया। इनको एडाप्ट करके जैसे कि घरवाली बना लिया। कहते है इन दवारा मैं तुमको अपना बनाता हूँ। इनको माता भी कहा जाता है तो पिता भी। शिव बाबा को तो माता नहीं कहेंगे ना वो तो निराकार फादर है। सबका। हम तो उनके बच्चे है। उनको मातापिता दोनों कहते है। इनमें मैं प्रवेश कर एडाप्ट करता

5-5-67

करता हूँ। इसलिये यह माता भी हो गई। यह बाते कोई समझते नही है। नां ही कब किसके ख्याल मे ही आता है। बिलकुल ही बुधी हीन ज्ञान हीन बन गये है। बाप कहते है शास्त्र है वे भक्ति मार्ग गिरने का मार्ग। भक्ति तो है ही दुर्गति मार्ग। भक्ति से तो दुर्गति ही होती है। पत्थर बुधी बन जाते है। बाप पारस बुधी बनाते है रावण फिर पत्थर बुधी बनाते है। एकदम जैसे कि बन्दर बुधी। किसको भी यह पता नही है कि रचता कौन है। रचना कैसे होती है। इसलिये ही रामायण मे भी बन्दर नाम रखा है। बाबा ने बन्दर सैना ली है। एक की तो बात नही हो सक्ती। बाप कहते है तुम सभी सीताये हो मै तुमको इस भक्ति मार्ग से छुड़ाने आया हूँ। तुम सभी रावण राज्य मे हो। रावण को जलाते भी है परन्तु वो कौन है। कबसे इनका राज्य शुरू होता है वो कोई नही जानते है। रावण को ~~[illegible]~~ गधो का सीस दे देते है। कुछ भी समझते नही है। बाप कहते है मनुष्य रावण राज्य मे गधे से भी बदतर हो जाते है। एक दो को गाली देते रहते है। गधे का मिसाल भी देते है उनका सारा श्रृंगार कर खड़ा करो फिर सारे कपड़े मिट्टी मे खराब कर देते है। बाप भी कहते है मै भी आया हूँ श्रृंगार करने परन्तु फिर माया के वश होकर सारा खराब कर लेते है। गटर मे गिर पड़ते है। कहते हो पावन बनाओ। तो अब पतितपणा छोड़ो नां। मुझे याद करते रहो। कहते है बाबा आज हार खा ली तो माना की गधे का गधा हो गया। 8-10 वर्ष भी पवित्र रहते है फिर भी किसीके संगम मे आकर सारा श्रृंगार बिगाड़ लेते है। 10 वर्ष की सारी की कराई कमाई सारी चट कर लेते है। पत्थर बुधी बन जाते है। फिर पारस बुधी बनने लिये पुरुषार्थ करना पड़े। इसमे खर्चा की तो बात ही नही योग लगाओ। फिर चढ़ना बड़ा मुश्किल हो ~~[illegible]~~ जाता है। मेहनत है। भगवान पढ़ाते है बहुतो को याद नही रहता। मै स्टुडेन्ट हूँ। वो टीचर है। मै बच्चा हूँ वो बाप है। तो उनकी ही मत पर चलना चाहिये। गुरूओ के फालोवर्स बनते है। गुरू को कहते है कि हम भगवान से कैसे मिले तो गुरू उनको कहते है ~~[illegible]~~ भगवान तो सर्वव्यापी है। तुम भी भगवान हो। ~~[illegible]~~ बेड़ा ही गर्क कर देते है। पत्थर बुधी को कितना भी समझाओ कब भी समझेंगे नही। इस समय के जो भी मनुष्य मात्र है सबकी ब्रेन काम की नही रही है। इस समय के मनुष्यों की ब्रेन से बन्दरो की ब्रेन तीखी ~~[illegible]~~ है। इसलिये ही बन्दर की गलैन्ट्स निकाल कर मनुष्य मे डालते है। अब तुम बच्चे जानते हो हम अब पारस बुधी बनने आये है। तो श्रीमत पर चलना पड़े नां। बाप इन दवारा तुमको ज्ञान देते है। बाप कहते है मेरी निन्दा करायेंगे। पत गवायेंगे तो ठौर नही पायेंगे। ऐम आब्जेक्ट तो यहां ही है। अगर ऐसा पुरुषार्थ करेंगे तो यह बनेंगे। पहले-2 तो यह समझाना चाहिये कि हम आत्मा को और बाप को तो जानूं। बाप ने तुमको यहां भेजा है पार्ट बजाने के लिये फिर तुम उनको भूल क्यो जाते हो। पुकारते हो नां तुम मात-पिता.... तुम भी कहते थे। अब निराकार को मात पिता कहते है। वो तो निराकार ही है। बाप है। मां तो है नही। अभी तुमको पता पड़ा है कि ब्रहमा माता भी है तो पिता भी है। गाते भी इनके लिये ही है तुम मात-पिता.... वो आकर ऐडाप्ट करते है। लिखा भी हुआ है ब्रहमा दवारा स्थापना। तो जरूर ब्राहमणो की ही स्थापना होगी। यह बाते है नई है कोई समझ नही सक्ते है। इस समय सभी पत्थर बुधी है। सतयुग मे होते है पारस बुधी। तो पहले-2 बाप का पुरा परिचय देना है जो समझे कि हम उस बाप के बच्चे है। बाप इस ब्रहमा दवारा रचना रचते है। यह सब ब्र, कु, कु है नां। संगम युग पर बाप रचना रचते है। सतयुग मे थोड़ेई ब्र, कु, कु होंगे। कोई भी आते है तो पहले पूछना है कहां आये हो। हम ब्र, कु, कु है। किसके बच्चे है जानते हो? ब्रहमा को किसने और कैसे रचा। पहले ही पहले अलफ समझे तब आगे बढ़ना चाहिये। अच्छा मीठे-2 सिकीलधे 5000 वर्ष के बाद मिले हुये सर्विसेबुल आज्ञाकारी फरमानबरदार श्रीमत पर चलने वाले, सपूत, सदा बाप को याद करने वाले नूरे रत्नो को बाप वा दादा का सब बच्चों सहित याद प्यार और बच्चों को गुड मार्निंग। असैम